

रविवार 21 सितंबर, 2025

विषय — सामग्री

स्वर्ण पाठः यशायाह 40 : 4, 5

"हर एक तराई भर दी जाए और हर एक पहाड़ और पहाड़ी गिरा दी जाए; जो टेढ़ा है वह सीधा और जो ऊंचा नीचा है वह चौरस किया जाए। तब यहोवा का तेज प्रगट होगा और सब प्राणी उसको एक संग देखेंगे; क्योंकि यहोवा ने आप ही ऐसा कहा है॥"

उत्तरदायी अध्ययनः भजन संहिता 97 : 1, 4-7, 9, 12

- ¹ यहोवा राजा हुआ है, पृथ्वी मगन हो; और द्वीप जो बहुतेरे हैं, वह भी आनन्द करें!
- ⁴ उसकी बिजलियों से जगत प्रकाशित हुआ, पृथ्वी देखकर थरथरा गई है!
- ⁵ पहाड़ यहोवा के साम्हने, मोम की नाई पिघल गए, अर्थात् सारी पृथ्वी के परमेश्वर के साम्हने॥
- ⁶ आकाश ने उसके धर्म की साक्षी दी; और देश देश के सब लोगों ने उसकी महिमा देखी है।
- ⁷ जितने खुदी हुई मूर्तियों की उपासना करते और मूर्तों पर फूलते हैं, वे लज्जित हों; हे सब देवताओं तुम उसी को दण्डवत करो।
- ⁹ क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है; तू सारे देवताओं से अधिक महान ठहरा है।
- ¹² हे धर्मियों यहोवा के कारण आनन्दित हो; और जिस पवित्र नाम से उसका स्मरण होता है, उसका धन्यवाद करो!

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यशायाह 60 : 1-4 (से 1st :)

- ¹ उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।
- ² देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा।
- ³ और अन्यजातियां तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे॥
- ⁴ अपनी आंखें चारो ओर उठा कर देख

2. भजन संहिता 114 : 1-7

- 1 जब इस्राएल ने मिस्त्र से, अर्थात याकूब के घराने ने अन्य भाषा वालों के बीच में कूच किया,
- 2 तब यहूदा यहोवा का पवित्र स्थान और इस्राएल उसके राज्य के लोग हो गए॥
- 3 समुद्र देखकर भागा, यर्दन नदी उलटी बही।
- 4 पहाड़ मेढ़ों की नाई उछलने लगे, और पहाड़ियां भेड़- बकरियों के बच्चों की नाई उछलने लगीं॥
- 5 हे समुद्र, तुझे क्या हुआ, कि तू भागा? और हे यर्दन तुझे क्या हुआ, कि तू उलटी बही?
- 6 हे पहाड़ों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़ों की नाई, और हे पहाड़ियों तुम्हें क्या हुआ, कि तुम भेड़- बकरियों के बच्चों की नाई उछलीं?
- 7 हे पृथ्वी प्रभु के साम्हने, हां याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा।

3. 2 राजा 6 : 1-17

- 1 और भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से किसी ने एलीशा से कहा, यह स्थान जिस में हम तेरे साम्हने रहते हैं, वह हमारे लिये सकेत है।
- 2 इसलिये हम यरदन तक जाएं, और वहां से एक एक बल्ली ले कर, यहां अपने रहने के लिये एक स्थान बना लें; उसने कहा, अच्छा जाओ।
- 3 तब किसी ने कहा, अपने दासों के संग चलने को प्रसन्न हो, उसने कहा, चलता हूँ।
- 4 तो वह उनके संग चला और वे यरदन के तीर पहुंच कर लकड़ी काटने लगे।
- 5 परन्तु जब एक जन बल्ली काट रहा था, तो कुल्हाड़ी बेंट से निकल कर जल में गिर गई; सो वह चिल्ला कर कहने लगा, हाय! मेरे प्रभु, वह तो मंगनी की थी।
- 6 परमेश्वर के भक्त ने पूछा, वह कहां गिरी? जब उसने स्थान दिखाया, तब उसने एक लकड़ी काट कर वहां डाल दी, और वह लोहा पानी पर तैरने लगा।
- 7 उसने कहा, उसे उठा ले, तब उसने हाथ बढ़ा कर उसे ले लिया।
- 8 अराम का जाजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था, और सम्मति कर के अपने कर्मचारियों से कहा, कि अमुक स्थान पर मेरी छावनी होगी।
- 9 तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, कि चौकसी कर और अमुक स्थान से हो कर न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करने वाले हैं।
- 10 तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा कर के परमेश्वर के भक्त ने उसे चिताया था, भेज कर, अपनी रक्षा की; और उस प्रकार एक दो बार नहीं वरन बहुत बार हुआ।
- 11 इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया; सो उसने अपने कर्मचारियों को बुला कर उन से पूछा, क्या तुम मुझे न बताओगे कि हम लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है? उसके एक कर्मचारी ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नहीं,
- 12 एलीशा जो इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू शयन की कोठरी में बोलता है।
- 13 राजा ने कहा, जा कर देखो कि वह कहां है, तब मैं भेज कर उसे पकड़वा मंगाऊंगा। और उसको यह समाचार मिला कि वह दोतान में है।
- 14 तब उसने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल भेजा, और उन्होंने रात को आकर नगर को घेर लिया।

- 15 भोर को परमेश्वर के भक्त का टहलुआ उठा और निकल कर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे हुए पड़ा है। और उसके सेवक ने उस से कहा, हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें?
- 16 उसने कहा, मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं।
- 17 तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके। तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा, कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है।

4. यशायाह 17 : 7, 8

- 7 उस समय मनुष्य अपने कर्ता की ओर दृष्टि करेगा, और उसकी आंखें इस्राएल के पवित्र की ओर लगी रहेंगी।
- 8 वह अपनी बनाई हुई वेदियों की ओर दृष्टि न करेगा, और न अपनी बनाई हुई अशेरा नाम मूरतों वा सूर्य की प्रतिमाओं की ओर देखेगा।

5. 1 कुरिन्थियों 1 : 26, 27, 29, 31

- 26 हे भाइयो, अपने बुलाए जाने को तो सोचो, कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए।
- 27 परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है, कि ज्ञान वालों को लज्जित करे; और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे।
- 29 ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के साम्हने घमण्ड न करने पाए।
- 31 ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करे॥

6. 2 कुरिन्थियों 4 : 6, 16-18

- 6 इसलिये कि परमेश्वर ही है, जिस ने कहा, कि अन्धकार में से ज्योति चमके; और वही हमारे हृदयों में चमका, कि परमेश्वर की महिमा की पहिचान की ज्योति यीशु मसीह के चेहरे से प्रकाशमान हो॥
- 16 इसलिये हम हियाव नहीं छोड़ते; यद्यपि हमारा बाहरी मनुष्यत्व नाश भी होता जाता है, तौभी हमारा भीतरी मनुष्यत्व दिन प्रतिदिन नया होता जाता है।
- 17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।
- 18 और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।

7. हबक्कूक 2 : 20 (भगवान)

- 20 ... यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है; समस्त पृथ्वी उसके साम्हने शान्त रहे॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 277: 24 (वास्तविक का क्षेत्र)-32

वास्तविक का क्षेत्र आत्मा है। आत्मा की विषमता पदार्थ है, और वास्तविक के विपरीत दिव्य नहीं है, - यह एक मानवीय अवधारणा है। सामग्री कथन की त्रुटि है। आधार में यह त्रुटि प्रत्येक कथन में निष्कर्ष में त्रुटियों की ओर ले जाती है जिसमें वह प्रवेश करती है। पदार्थ के संबंध में हम कुछ भी कह या विश्वास नहीं कर सकते हैं, अमर है, क्योंकि पदार्थ अस्थायी है और इसलिए, एक नश्वर घटना है, एक मानवीय अवधारणा, कभी-कभी सुंदर, हमेशा गलत।

2. 292: 13-18

पदार्थ नश्वर मन की आदिम मान्यता है, क्योंकि इस तथाकथित मन का आत्मा के प्रति कोई संज्ञान नहीं है। नश्वर मन के लिए, सामग्री पर्याप्त है, और बुराई वास्तविक है। नश्वर की तथाकथित इंद्रियां भौतिक हैं। इसलिए नश्वर का तथाकथित जीवन सामग्री पर निर्भर है।

3. 278: 3-7, 12-22

दैवीय तत्वमीमांसा पदार्थ की व्याख्या करती है। आत्मा ही एकमात्र पदार्थ और चेतना है जिसे दिव्य विज्ञान द्वारा मान्यता प्राप्त है। भौतिक इंद्रियां इसका विरोध करती हैं, लेकिन कोई भौतिक इंद्रियां नहीं हैं, क्योंकि पदार्थ का कोई मन नहीं है।

नश्वर की झूठी मान्यताओं में से एक यह है कि सामग्री पर्याप्त है या जीवन और संवेदना है, और केवल एक समरूप नश्वर चेतना में मौजूद है। इसलिए, जैसा कि हम आत्मा और सत्य से संपर्क करते हैं, हम पदार्थ की चेतना खो देते हैं। यह मानते हुए कि भौतिक पदार्थ हो सकता है, एक और प्रवेश की आवश्यकता है, - अर्थात्, आत्मा अनंत नहीं है और यह मामला आत्म-रचनात्मक, आत्म-अस्तित्व और शाश्वत है। आइससे यह होगा कि दो शाश्वत कारण हैं, एक दूसरे के साथ हमेशा के लिए युद्ध करना; और फिर भी हम कहते हैं कि आत्मा सर्वोच्च और सर्व-उपस्थिति है।

4. 279: 9-10, 13-15, 22-29

पदार्थ न तो मन द्वारा निर्मित है और न ही मन की अभिव्यक्ति और समर्थन के लिए है।

आत्मा और पदार्थ न तो सहअस्तित्व कर सकते हैं और न ही सहयोग कर सकते हैं, और सत्य को छोड़कर कोई और नहीं बना सकता है, त्रुटि पैदा कर सकता है, या इसके विपरीत।

मानव दर्शन, सिद्धांत और चिकित्सा की प्रत्येक प्रणाली कमोबेश सर्वेश्वरवादी विश्वास से संक्रमित है कि पदार्थ में मन है; लेकिन यह विश्वास एक जैसे रहस्योद्घाटन और सही तर्क के विपरीत है। एक तार्किक और वैज्ञानिक निष्कर्ष केवल इस ज्ञान के माध्यम से पहुंचता है कि होने के दो आधार नहीं हैं, पदार्थ और मन, लेकिन एक अकेले - मन।

5. 250: 25-27 (से 2nd.)

नश्वर मन को हटा दें, तो मनुष्य के रूप में पदार्थ में उतनी ही समझ नहीं रह जाती जितनी वृक्ष में होती है। लेकिन आध्यात्मिक, वास्तविक मनुष्य अमर है।

6. 284: 15-23, 28-3

क्या ईश्वरत्व को भौतिक इंद्रियों के माध्यम से जाना जा सकता है? क्या भौतिक इंद्रियाँ, जिन्हें आत्मा का कोई प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं मिलता, आध्यात्मिक जीवन, सत्य और प्रेम के बारे में सही गवाही दे सकती हैं?

इन सभी प्रश्नों का उत्तर सदैव नकारात्मक ही होगा।

भौतिक इंद्रियाँ ईश्वर का कोई प्रमाण नहीं प्राप्त कर सकती हैं। वे न तो आत्मा को आंख से देख सकते हैं और न ही उसे कान के माध्यम से सुन सकते हैं, और न ही वे आत्मा को महसूस कर सकते हैं, स्वाद ले सकते हैं, न ही उसे सूँघ सकते हैं।

क्रिश्चियन साइंस के अनुसार, मनुष्य की एकमात्र वास्तविक भावना आध्यात्मिक है, जो दिव्य मन से निकलती है। विचार ईश्वर से मनुष्य की ओर जाता है, लेकिन न तो संवेदना और न ही रिपोर्ट भौतिक शरीर से मन तक जाती है। अंतर्मन हमेशा ईश्वर से लेकर उसके विचार, मनुष्य तक होता है। पदार्थ संवेदनशील नहीं है और उसे अच्छे या बुरे, सुख या दुःख का ज्ञान नहीं हो सकता। मनुष्य का व्यक्तित्व भौतिक नहीं है।

7. 285: 7-14

तो फिर, वह भौतिक व्यक्तित्व क्या है जो भोगता है, पाप करता है और मर जाता है? यह मनुष्य नहीं है, परमेश्वर की छवि और समानता है, बल्कि मनुष्य की नकली, उलटी समानता, पाप, बीमारी और मृत्यु नामक विषमता है। दावे की असत्यता कि एक नश्वर भगवान की सच्ची छवि है आत्मा और पदार्थ, मन और शरीर के विपरीत संकेत द्वारा सचित्र है, क्योंकि एक बुद्धि है, जबकि दूसरा गैर-बुद्धि है।

8. 217: 29 (आप)-8

आप कहते हैं, "कठिन मुझे थका देती है।" लेकिन यह मैं क्या हूँ? यह मांसपेशी है या दिमाग? कौन थक गया है और इसलिए बोलता है? क्या मन के बिना मांसपेशियाँ थक सकती हैं? क्या मांसपेशियाँ बात करती हैं, या आप उनके लिए बात करते हैं? सामग्री गैर-बुद्धिमान है। नश्वर मन झूठी बातें करता है, और जो थकावट की पुष्टि करता है, उसने वह थकावट बना दी है।

तुम यह नहीं कहते कि एक पहिया थका हुआ है; और फिर भी शरीर पहिए के समान भौतिक है। यदि मानव मन शरीर के बारे में जो कहता है, उसके लिए यह न होता, तो शरीर, निर्जीव चक्र की तरह, कभी थकता नहीं। सत्य की चेतना हमें अचेतन अवस्था में घंटों से अधिक विश्राम देती है।

9. 273: 21-28

भगवान ने आध्यात्मिक कानून को रद्द करने के लिए कभी भी एक भौतिक कानून का पालन नहीं किया। यदि ऐसा कोई भौतिक कानून होता, यह आत्मा, परमेश्वर की सर्वोच्चता के खिलाफ होगा, और यह निर्माता के ज्ञान को प्रभावित करेगा। यीशु लहरों पर चले गए, भीड़ को खिलाया, बीमारों को चंगा किया और भौतिक कानूनों के विरोध में मृतकों को उठाया। उनके कार्यों में विज्ञान का प्रदर्शन था, भौतिक बोध या कानून के झूठे दावों पर काबू पाने से।

10. 468: 8-15

सवाल — होने का वैज्ञानिक कथन क्या है?

उत्तर — पदार्थ में कोई जीवन, सत्य, बुद्धिमत्ता नहीं है, न ही पदार्थ। सब अनंत मन और उसकी अनंत अभिव्यक्ति है, भगवान के लिए सभी में है। आत्मा अमर सत्य है; मामला नश्वर त्रुटि है। आत्मा ही वास्तविक और शाश्वत है; पदार्थ असत्य और लौकिक है। आत्मा ईश्वर है, और मनुष्य उसकी छवि और समानता है। इसलिए आदमी भौतिक नहीं है; वह आध्यात्मिक है।

11. 120: 11 (मामला)-12

... पदार्थ मनुष्य के लिए कोई शर्त नहीं बना सकता।

12. 269: 21-28

भौतिक इंद्रियों की गवाही न तो पूर्ण है और न ही दिव्य है। इसलिए मैं अपने आप को यीशु के उपदेशों पर, भविष्यद्वक्ताओं के, और मन के विज्ञान की गवाही पर अनारक्षित रूप से रोपित करता हूं। अन्य नींव वहाँ कोई नहीं हैं। अन्य सभी प्रणालियाँ - सिस्टम पूर्ण रूप से या आंशिक रूप से ज्ञान के आधार पर भौतिक इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त की जाती हैं - हवा से हिलती हुई चट्टानें हैं, न कि चट्टान पर बने मकान।

13. 205: 32-3

जब हम ईश्वर के साथ अपने संबंध को पूरी तरह समझ लेते हैं, तो हमारे पास ईश्वर के अलावा कोई दूसरा मन नहीं रह जाता - कोई दूसरा प्रेम, ज्ञान या सत्य नहीं, जीवन की कोई दूसरी भावना नहीं, और पदार्थ या त्रुटि के अस्तित्व की कोई चेतना नहीं।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विषी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6